'परम्परागत एवं आधुनिक सामंजस्य हो शिक्षा व्यवस्था में'

कोलकाता : समय बदल रहा है, साथ ही आज कल के छात्रों की जरूरतें भी बदल रही हैं। इस समय जरूरत है समय के साथ शिक्षा पद्धति में भी बदलाव लाने का। एक बार फिर से सोचने की किन चीजों का सामंजस्य कर शिक्षा प्रणाली को और बेहतर बनाया जा सकता है। इसी मुद्दे पर विस्तारित चर्चा करने के लिए गत शुक्रवार को आकाश इंस्टिट्यूट एवं द न्यूटाउन स्कूल द्वारा 'रिथिंकिंग एडुकेशन' पर कॉनक्लेव का आयोजन किया गया। चर्चा में अपना वक्तव्य दिया राइटर दुरजॉय दत्ता, शिक्षाविद गौरव शकलानी एवं नितिन बल्यान ने। इसके अलावा आयोजन में द न्यूटाउन स्कूल के फाउंडर डायरेक्टर सुनील अग्रवाल, संजय खेमका एवं विभिन्न स्कूलों के प्रिंसिपल ने हिस्सा लिया। बेस्ट सेलिंग समकालीन उपन्यासकार और पटकथा लेखक दुरजॉय दत्ता ने छात्र जीवन में रोल मॉडल के महत्व को बताया। यहां उन्होंने अपने जीवन के इंजीनियर से लेखक बनने के सफर के बारे में बताते हुए कहा कि अपने अंदर की आवाज को सुने कि आप खुद क्या करना चाहते हैं और उसी का अनुसरण करना चहिए। एडुकेशन टेक्नोलॉजी सोल्यूशन के वर्ल्ड वाइड लीडर नितिन बल्यान ने परम्परागत तरीकों को टेक्नोलॉजी से जोड़कर एक नयी शिक्षा व्यवस्था को उन्नत करने की बात कही। द न्यूटाउन स्कूल की प्रिंसिपल शताब्दी भट्टाचार्य ने भी कहा कि अब शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की जरूरत है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि परम्परा को भूल जाएं। परम्परा और आधुनिकता दोनों को एक साथ लेकर चलना होगा। वहीं आकाश इंस्टिट्यूट के बारे में बताते हुए चीफ मार्केटिंग ऑफिसर सुदीप्ता चौधरी ने कहा कि आकाश की सफलता एवं छात्रों की मांग को देखते हुए आकाश के जल्द ही नए ब्रांच शुरू किये जाएंगे।

आकाश इंस्टिट्यूट एवं द न्यूटाउन स्कूल द्वारा 'रिथिंकिंग एडुकेशन' पर कॉनक्लेव का उद्घाटन करते अतिथि